• संस्कार...

अंतिम यात्रा देखना

संसार का सबसे बड़ा सत्य मृत्यु है। जो भी इस संसार में आया है उसकी मृत्यु निश्चित है। मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार किया जाता है। अंतिम संस्कार हिंदू धर्म में बताए गए 16 संस्कारों में शामिल है। मृत्यु के बाद मृतक की शव यात्रा निकलती है। हिंदू धर्म में शव यात्रा को विशेष महत्व दिया गया है। चाहे कोई व्यक्ति लंबी आयु जीने के बाद मरा हो या किसी की अकाल मृत्यु हुई हो, दोनों की हालातों में अंतिम यात्रा निकाली जाती है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, शव यात्रा निकालने से मृतक की आत्मा को शांति मिलती है।

साथ ही शव यात्रा में शामिल होने वालों के भी मनोरथ पूर्ण होते हैं। हम सबने भी कभी न कभी कहीं जाते हुए रास्ते में शव यात्रा जरूर देखी होगी। कई लोग शव यात्रा देखने के बाद सोचते हैं कि उनका दिन खराब हो जाएगा। वहीं कुछ लोग अगर गलती से शव यात्रा में शामिल किसी व्यक्ति को छू लेते हैं, तो घर आकर नहाते

हैं। अगर आप भी शव यात्रा को अशुभ मानते हैं, तो आपको बता दें कि हिंदू धर्म में शव यात्रा देखना अशुभ नहीं शुभ माना जाता है। आइए जानते हैं कि अगर रास्ते में जाते हुए शव यात्रा दिख जाती है, तो इससे क्या संकेत मिलते है?

शकुन शास्त्र के अनुसार-कहीं जाते समय रास्ते में शव यात्रा का दिखना बहुत ही शुभ माना गया है। शकुन शास्त्र के अनुसार, अगर आपको कहीं जाते समय रास्ते में शव यात्रा दिख जाए तो ये इस बात का इशारा होता है कि आप जिस काम के लिए जा रहे हैं, उसमें आपको सफलता मिल सकती है। शव यात्रा दिखने पर आपको हाथ जोड़कर प्रणाम करना चाहिए। अगर शव यात्रा किसी अपने या परिचित की है, तो उसे कंधा देना चाहिए। ऐसा करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

दो मिनट का मौन रखें-मान्यता है कि मृत व्यक्ति परमात्मा की शरण में जाता है, इसलिए शव यात्रा दिखना ईश्वर के आशीर्वाद के समान माना जाता है। अगर आपको शव यात्रा दिखे तो राम नाम लें और दो मिनट का मौन रखें। संभव हो तो पुष्प अर्पित करें इससे मृत आत्मा को शांति मिलती है। वहीं सुहागिन महिला की शव यात्रा दिखे, तो परंपरा के अनुसार सिंदूर का दान करें।

• गढ़वाल...

तुंगनाथ शिव मंदिर

भारत में भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग और कई प्राचीन वो प्रसिद्ध मंदिर हैं, जहां भक्त महादेव के दर्शन के लिए पहुंचते हैं, लेकिन एक शिव मंदिर विश्व में सबसे ऊंचाई पर स्थित है। इस मंदिर का नाम है तुंगनाथ शिव मंदिर। तुंगनाथ मंदिर का धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। भगवान शिव का प्राचीन तुंगनाथ मंदिर उत्तराखंड के गढ़वाल के रुद्रप्रयाग जिले में ऊंचे पर्वत पर है। ये मंदिर पंच केदार में शामिल है। इस स्थाान पर लंकापति रावण ने भी तपस्या की थी।

ये मंदिर 3,680 मीटर (12,073 फीट) की ऊंचाई पर स्थित है। धार्मिक मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण पांडवों द्वारा कराया गया था। माना जाता है कि कुरुक्षेत्र में हुए नरसंहार को लेकर शिव जी पांडवों से नाराज थे। पांडव भी अपने किए का पश्चाताप करना चाह रहे थे, इसलिए वो भगवान शिव की तलाश में निकल पड़े। जब भगवान शिव को ये पता चला कि पांडव उनको तलाश रहे हैं, तो वो छिपने लगे। पांडव भगवान शिव का पीछा करते करते केदार तक पहुंच गए।

इसके बाद शिव जी ने बैल का रूप धारण किया और वहीं पशुओं के बीच बैठ गए। भीम को शक हुआ तो उन्होंने बैल रूपी शिव की पीठ पकड़ ली। फिर भगवान शिव अपना आकार बड़ा करते चले गए। इसके बाद जहां भगवान की पीठ रह गई वो स्थान केदारनाथ बना और जहां उनकी भुजाएं निकली वह स्थान तुंगनाथ बना। इसी तरह केदारनाथ के साथ मिलाकर इन सभी स्थानों को पंच केदार कहा जाता है।

रामायण काल से भी तुंगनाथ का संबंध बताया जाता है। मान्यताओं के अनुसार, यही वही स्थान है, जहां रावण ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की थी। इतना ही नहीं रावण का वध करने के बाद भगवान श्रीराम ने भी तुंगनाथ से डेढ़ किलोमीटर दूर चंद्रशिला पर आकर ध्यान लगाया था और वहां कुछ समय अकेले व्यतीत किया था। धार्मिक मान्यता है कि बाबा केदार के साथ-साथ पंच केदार की यात्रा करने से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

पूजा और व्रत से पहले क्यों लिया जाता है संकल्प

धार्मिक विद्वानों के अनुसार, बिना संकल्प लिए शुरू की जाने वाली पूजा और व्रत अधूरा माना जाता है। इसको करने का शुभ फल भी प्राप्त नहीं होता. धार्मिक मान्यता है कि बिना संकल्प के पूजा और व्रत रखने वाले लोगों का पुण्य फल देवराज इंद्र ले जाते हैं। ऐसे में हर दिन सामान्य पूजा करने या किसी धार्मिक अनुष्ठान को करने से पहले संकल्प अवश्य लेना चाहिए...

सनातन धर्म में पूजा-पाठ और व्रत ईश्वर की अराधना का माध्यम हैं. पूजा-पाठ और व्रत के कई नियम धर्म शास्त्रों में बताए गए हैं, जिनका पालन बहुत आवश्यक होता है, तभी पूजा और व्रत का पूरा फल मिलता है। नियमों की अनदेखी करने पर देवी-देवता नाराज होते हैं और पूजा और व्रत का फल नष्ट हो जाता है. इन्हीं नियमों में से एक सबसे जरूरी नियम है कि किसी भी व्रत और पूजा को करने से पहले संकल्प लेना। पूजा करने और व्रत रखने से पहले संकल्प लिया जाता है। पूजा-पाठ करने और व्रत रखने से पहले संकल्प लेना बहुत अनिवार्य माना गया है। मान्यता है कि बिना संकल्प लिए पूजा और व्रत पूरा नहीं होता। पूजा और व्रत करने से पहले लिए जाने वाले व्रत का संकल्प का संबंध इंद्र देव से बताया गया है। आइए इस बारे में विस्तार से जानते हैं।

धार्मिक विद्वानों के अनुसार, बिना संकल्प लिए शुरू की जाने वाली पूजा और व्रत अधूरा माना जाता है। इसको करने का शुभ फल भी प्राप्त नहीं होता. धार्मिक मान्यता है कि बिना संकल्प के पूजा और व्रत रखने वाले लोगों का पुण्य फल देवराज इंद्र ले जाते हैं। ऐसे में हर दिन सामान्य पूजा करने या किसी धार्मिक अनुष्ठान को करने से पहले संकल्प अवश्य लेना चाहिए।

● **संकल्प क्या है**-पूजा-पाठ और व्रत रखने से पहले संकल्प लेने का अर्थ अपने इष्टदेव या फिर अपने आप को साक्षी मानना है। पूजा-पाठ करने या व्रत रखने वाला व्यक्ति अपने इष्टदेव से प्रार्थना करता है कि जिस मनोकामना की पूर्ति की खातिर उसने पूजा और व्रत संकल्प लिया है वो पूरी हो जाए. पूजा और व्रत से अच्छे से बिना विघ्न के पूरा हो जाने के लिए भी संकल्प लिया जाता है।

● **इस तरह से लें संकल्प**-संकल्प लेने के लिए पूजा और व्रत करने वाले व्यक्ति को सबसे पहले हाथ में जल लेना चाहिए। फिर अक्षत और फूल रखना चाहिए। इसके बाद गणेश जी का ध्यान करते हुए संकल्प लेना चाहिए। गणेश जी ही सृष्टि के पंचमहाभूतों यानी अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु और आकाश के अधिपति माने जाते हैं. इस विधि से संकल्प लेने पर पूजा और व्रत में कोई बाधा नहीं आती है व पूजन-व्रत का पूर्ण फल मिलता है।

● **पूजा-पाठ के नियम**

पूजा-पाठ से जीवन में सकारात्मकता का संचार होता है। लोग मन की शांति और ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए रोजाना पूजा-पाठ करते हैं। लेकिन कई बार लोग पूजा के दौरान अंजाने में ऐसी छोटी-छोटी गलतियां कर बैठते हैं, जिससे उनका मन अशांत रहता है। वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि पूजा के दौरान मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए। उसमें भी पूर्व दिशा की ओर मुख करके पूजा करने से साधक को पूजा का पूरा फल प्राप्त होता है। ऐसा कहा जाता है कि पूर्व दिशा में देवी-देवताओं का वास होता है। यही वजह है कि इस दिशा को सकारात?मकता का प्रतीक माना गया है।

● **जमीन पर बैठकर करें पूजा**-पूजा के दौरान साधक को जमीन पर आसन बिछाकर सीधा बैठना चाहिए। लेकिन इस बात का जरूर ध्यान रखें कि पूजा के समय कभी खाली जमीन पर न बैठें, क्योंकि इससे पूजा का पूरा फल प्राप्त नहीं होता है। इसके अलावा अपनी पूजन सामग्री को भी चौकी पर रखें।

■ पं. नित्यानंद

• शुभ...

विष्णु की पूजा

रविवार को भगवान विष्णु की पूजा के लिए शुभ माना जाता है। इस दिन देवी तुलसी विष्णु की ध्यान साधना में लीन रहती हैं इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि रविवार को तुलसी जी पर जल नहीं चढ़ाना चाहिए और उनकी पत्तियां नहीं तोड़नी चाहिए। अगर कोई ऐसा करता है तो देवी की साधना में बाधा उत्पन्न करता है।

रविवार की तरह ही हर एकादशी के दिन भी तुलसी जी पर जल नहीं चढ़ाना चाहिए और उनकी पत्तियां तोड़ना वर्जित है, क्योंकि एकादशी के दिन देवी तुलसी भगवान हरि (विष्णु) के लिए निर्जला एकादशी व्रत रखती हैं। ऐसा माना जाता है कि रविवार या एकादशी के दिन तुलसी के पत्ते तोड़ने से घर में गरीबी और आर्थिक हानि आती है। यह भी कहा जाता है कि इससे भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी का आशीर्वाद नहीं मिलता है और परिवार में कलह उत्पन्न हो सकती है।

• दान...

हिंदू धर्म में झाड़ू को धन की देवी लक्ष्मी का रूप माना जाता है। मान्यता है कि झाड़ू का दान करने से घर से स्थिरता चली जाती है। घर की सुख-समृद्धि में कमी आने लगती है। ऐसे में झाड़ू का कभी भी दान न करें। बासी या बचा हुआ भोजन दान करना शुभ नहीं माना जाता। ये दान की भावना के खिलाफ है। दान देते समय ताजा, साफ और ठीक तरीके से तैयार किया गया भोजन ही दान में दें, कैंची या ब्लेड जैसी वस्तुएं आमतौर पर दान में देने से बचें।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित